MSP के बराबर हुआ भाव

कम सेल्स कोटा और बाढ़ से चीनी का मिल गेट प्राइस बढ़ा

[जयश्री भोसले। पुणे]

सरकार के अगस्त के लिए चीनी का सेल्स कोटा छोटा रखने और कई राज्यों में बाढ़ जैसे हालात से डिमांड प्रभावित होने की वजह से चीनी के मिल गेट प्राइस में इजाफा हुआ है।

मिल मालिकों ने बताया कि अंडरकटिंग बंद होने से चीनी का भाव बढ़कर मिनिमम सेल प्राइस (एमएसपी) के बराबर हो गया है। केंद्र ने जुलाई में चीनी के लिए 20.5 लाख टन का सेल्स कोटा तय किया था।

इंडस्ट्री और कारोबारियों का दावा था कि जुलाई में सबसे अधिक कोटा था। हालांकि, कारोबारियों का कहना है कि सावन और त्योहारी सीजन के चलते चीनी की मांग काफी ज्यादा है। इसलिए अगस्त के लिए 19 लाख टन का कोटा मांग के मुकाबले काफी कम है। शुगर इंडस्ट्री के जानकार विजय औताड़े ने बताया कि अगस्त का कोटा कम होने से कुछ जगहों पर मिल गेट प्राइस एमएसपी से भी अधिक हो गई हैं। हालांकि, बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में चीनी का कारोबार ठहर गया है। बाढ़ से प्रभावित कोल्हापुर, सांगली और सतारा से अगस्त में चीनी नहीं भेजी गई। बॉम्बे शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट अशोक जैन का कहना है कि इससे मुंबई में चीनी का थोक भाव बढ़ गया है। मुंबई के ही कारोबारी प्रफुल्ल विठलानी ने बताया कि अब चीनी का दाम उत्तर प्रदेश के उत्पादन पर निर्भर रहेगा।

अभी पूर्वोत्तर राज्यों और पश्चिम बंगाल से महाराष्ट्र की चीनी की काफी डिमांड है। अगर यूपी की मिलें अगस्त में अपने कोटे की पूरी चीनी बेच देती हैं तो इससे कीमतों में और भी उछाल आ सकता है। देश के प्रमुख चीनी उत्पादक राज्यों में से एक महाराष्ट्र में शुगर प्रॉडक्शन और भी कम हो सकता है।

> **त्योहारी सीजन** को देखते हुए अगस्त के लिए 19 लाख टन के सेल्स कोटे को मांग के मुकाबले कम बता रहे हैं कारोबारी

पहले भारी सूखे से राज्य में चीनी का उत्पादन कम होने की आशंका थी। कोल्हापुर के श्रीराम छत्रपति राजाराम एसएसके के मानद सलाहकार पी जी मेढे ने बताया, 'गन्ने की फसल कई दिनों से पानी में डूबी है। अब फसल के बचने की संभावना कम है। मैंने अपनी 73 साल की जिंदगी में ऐसी बाढ़ कभी नहीं देखी है।'

अभी भी बाढ़ की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है। फसलें अब भी डूबी हुई हैं। ऐसे में बाढ़ से नुकसान का आकलन करने में कुछ हफ्तों का वक्त लग सकता है।

Economic Times
13/8/19